AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं संरक्षण का तुलनात्मक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. अमर सिंह गौतम
सह प्राध्यापक
भूगोल विभाग
एच. आर. पी. जी. कॉलेज
संत कबीर नगर, उत्तर प्रदेश, भारत

शोध सार

तीव्र औद्योगीकरण, प्राकृतिक संसाधनों का अत्याधिक दोहन और पर्यावरण के लिए हानिकारक सामग्रियों के उपयोग ने पर्यावरण में स्पष्ट व्यवधान उत्पन्न किए हैं जिससे जीवन रक्षक प्रणाली को खतरा पैदा हो गया है। पर्यावरण की रक्षा केवल लोगों में जागरूकता पैदा करके ही की जा सकती है ताकि यह उनकी जीवनशैली का हिस्सा बन जाए। पर्यावरण जागरूकता का अर्थ है पर्यावरण या पर्यावरणीय समस्या के प्रति रुचि प्रदर्शित करना। इसका तात्पर्य न केवल पर्यावरण के बारे में समझ, बल्कि दृष्टिकोण, सिद्धांत और क्षमताएँ भी हैं, जो पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए आवश्यक हैं। इसके अलावा, पर्यावरण जागरूकता नागरिकों में ज़िम्मेदार व्यवहार विकसित करने में भी मदद करती है। प्रस्तुत अध्ययन लिंग और शिक्षण माध्यम के संदर्भ में शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करने का एक प्रयास है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए ग्वालियर जिले में संचालित शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 11वी के 100 विद्यार्थियों को नमूने के रूप में चुना गया था। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने यादृच्छिक प्रतिचयन तकनीक का उपयोग किया है। आँकड़ों का विश्लेषण वर्णनात्मक सांख्यिकी जैसे मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, स्वतंत्रता अंश, क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया। परिणामों से पता चला कि शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के पर्यावरण जागरूकता एवं संरक्षण पर किए गए शोध कार्य से स्पष्ट होता है कि शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययन कार्य कर रहे छात्र छात्राओं पर्यावरण जागरूकता एवं संरक्षण में कोई अंतर देखने को नहीं मिला। यदि उन्हें सही रूप से मार्गदर्शित किया जाए, तो न केवल वे स्वयं जागरूक हो सकते है बल्कि समाज में भी आवश्यकतानुसार सकारात्मक परिवर्तन कर सकते है।

मुख्य शब्द

औद्योगीकरण, पर्यावरण, जागरूकता, प्राकृतिक संसाधन.

पर्यावरण की रक्षा करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। हम प्रकृति के मालिक नहीं, बल्कि उसके रक्षक है।
अल्बर्ट आइंस्टीन

प्रस्तावना

तीव्र औद्योगिकीकरण, प्राकृतिक संसाधनों का अत्याधिक दोहन और पर्यावरण के लिए हानिकारक सामग्रियों के उपयोग ने पर्यावरण की रक्षा केवल लोगों में जागरूकता पैदा करके ही की जा सकती है ताकि यह उनकी जीवनशैली का हिस्सा बन जाए। पर्यावरण जागरूकता का अर्थ है पर्यावरण या पर्यावरणीय समस्या के प्रति प्रदर्शित करना। इसका तात्पर्य न केवल पर्यावरण के बारे में समझ, बल्कि दृष्टिकोण, सिद्धांत और क्षमताएँ भी हैं, जो पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए आवश्यक हैं। इसके अलावा, पर्यावरण जागरूकता नागरिकों में जिम्मेदार व्यवहार विकसित करने में भी मदद करती है।

उद्देश्य

- शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों में पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।
- शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं में पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।
- अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों में पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।
- अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं में पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं

$\mathbf{H_{01}}$ शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों में पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

$\mathbf{H_{02}}$ शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं में पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

$\mathbf{H_{03}}$ शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिसीमांकन

प्रस्तुत शोध पत्र ग्वालियर जिले के मुरार विकासखंड में संचालित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 11वीं कक्षा के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता के अध्ययन तक परिसीमित है।

न्यादर्श एवं न्यादर्शन विधि

प्रस्तुत शोध पत्र में ग्वालियर जिले में संचालित शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 11वी कक्षा के 100 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक विधि से किया गया।

तालिका सं. 1

विद्यालय	छात्र	छात्राएं	कुल विद्यार्थी
शासकीय	25	25	50
अशासकीय	25	25	50
कुल विद्यार्थी	50	50	100

उपकरणः शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधियां

प्रदत्त विश्लेषण के लिए मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, स्वतंत्रता अंश, क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया।

परिकल्पना परीक्षण

परिकल्पना 1: शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों में पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका सं. 2

विद्यालय	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	क्रान्तिक अनुपात	परिणाम (.05) असार्थक स्तर
शासकीय	49.00	17.20	48	0.71	असार्थक (स्वीकृत)
अशासकीय	51.94	11.13			

48 df पर 0.05 व 0.01 स्तर पर गणना की गई सार्थकता 0.71 है जो कि दोनों स्तर पर सार्थक नहीं है अतः शून्य परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है अर्थात् शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के पर्यावरण संबंधी ज्ञान में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना 2: शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं में पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका सं. 3

विद्यालय	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	क्रान्तिक अनुपात	परिणाम (.05) असार्थक स्तर
शासकीय	48.73	15.90	48	1.09	असार्थक (स्वीकृत)
अशासकीय	53.27	13.40			

48 df पर 0.05 व 0.01 स्तर पर गणना की गई सार्थकता 1.09 है जो कि दोनों स्तर पर सार्थक नहीं है अतः शून्य परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है अर्थात् शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं के पर्यावरण संबंधी ज्ञान में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना 3: शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका सं. 4

विद्यालय	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	स्वतंत्रता अंश	क्रान्तिक अनुपात	परिणाम (.05) असार्थक स्तर)
शासकीय	51.27	13.40	48	0.27	असार्थक (स्वीकृत)
अशासकीय	52.20	10.32			

48 df पर 0.05 व 0.01 स्तर पर गणना की गई सार्थकता 0.27 है जो कि दोनों स्तर पर सार्थक नहीं है अतः शून्य परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है अर्थात् शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के पर्यावरण संबंधी ज्ञान में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

निष्कर्ष

पर्यावरण जागरूकता एवं संरक्षण पर किए गए शोध कार्य से स्पष्ट होता है कि शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययन कार्य कर रहे छात्र–छात्राओं पर्यावरण जागरूकता एवं संरक्षण में कोई अंतर देखने को नहीं मिला। यदि उन्हें सही रूप से मार्गदर्शित किया जाए, तो न केवल वे स्वयं जागरूक हो सकते है बल्कि समाज में भी आवश्यकतानुसार सकारात्मक परिवर्तन कर सकते है।

पर्यावरण के प्रति जागरूकता हेतु सुझाव

पर्यावरण जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए, लोग प्लास्टिक का उपयोग ''कम करें, पुनः उपयोग करें और पुनःचक्रण करें'' जीवनशैली अपना सकते हैं, जल और ऊर्जा जैसे संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं और टिकाऊ

परिवहन का विकल्प चुन सकते हैं। सामुदायिक और शैक्षिक प्रयासों में सफाई कार्यों में भाग लेना, पेड़ लगाना और स्कूली पाठ्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा को शामिल करना शामिल है।

सामुदायिक और शैक्षिक प्रयास

- **दूसरों को शिक्षित करें**: बातचीत, सोशल मीडिया या सामग्री बनाकर पर्यावरणीय चुनौतियों और समाधानों के बारे में जानकारी साझा करें।
- **सामुदायिक परियोजनाओं में भाग लें**: स्थानीय सफाई कार्यों में स्वयंसेवा करें, वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित करें, या सामुदायिक स्थिरता परियोजनाओं में शामिल हों।
- **प्रकृति के प्रति प्रेम को बढ़ावा दें**: पर्यावरण के साथ जुड़ाव बनाने के लिए बाहरी गतिविधियों को प्रोत्साहित करें।
- **पर्यावरण के प्रति जागरूक व्यवसायों का समर्थन करें**: उन व्यवसायों का संरक्षण करें जो स्थिरता को प्राथमिकता देते हैं।
- **स्कूलों में शिक्षा को शामिल करें**: पर्यावरण शिक्षा को स्कूली पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने की वकालत करें।
- **कार्यस्थल पर कार्रवाई करें**: सहकर्मियों को अपशिष्ट कम करने, ऊर्जा संरक्षण और पुनः प्रयोज्य वस्तुओं का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें। पहलों का नेतृत्व करने के लिए एक ''हरित टीम'' बनाने पर विचार करें।

सन्दर्भ सूची

1. अस्थाना, विपिन (1990) *मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
2. कलीराम; सिंह, वीरेंद्र; रेखा (2012) *पर्यावरण शिक्षा,* आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ।
3. कोठारी, सी. आर. (2011) *रिसर्च मैथडोलॉजी,* न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
4. तोमर, जी. एस. (2017) *पर्यावरण शिक्षा,* आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ।
5. शर्मा, आर. ए. (2009) *शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया,* आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ।
6. वरुण, डी. एन. (2012, जून) गोरखपुर जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता, *भारतीय सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका,* (22)2,139–142।

——==00==——